अव्यक्त को अपने अनुभव में डुबाकर व्यक्त करना ही अनुवाद

राजस्थानी और अनुवाद विषय पर सिम्पोजियम का आयोजन

बीकानेर @ पत्रिका. साहित्य अकादमी नई दिल्ली की ओर से शनिवार को राजस्थानी और अनुवाद विषय पर सिम्पोजियम का आयोजन किया गया। राजस्थानी के वरिष्ठ लेखक व समालोचक अर्जुनदेव चारण ने कहा कि अव्यक्त को अपने अनुभव में डुबाकर व्यक्त करना ही अनुवाद है। साहित्य अकादमी की तरफ से ही दूसरा सिम्पोजियम रविवार को आयोजित होगा।

अंत्योदय नगर के निजी स्कूल के ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. चारण ने सृष्टि की हर रचना को अनुवाद बताया। उन्होंने कहा कि 'माघ पंडित अर डोकरी री बात' के जरिये विजयदान देथा 'बिज्जी' ने राजस्थानी लोक को अपने समय के 'राजा-बणिया' जैसे जिक्र से समृद्ध करने का काम किया। लेखक कैलाश कबीर ने कहा कि एक से दूसरी और दूसरी से तीसरी भाषा में अनुवाद करते समय कई बार कृति का मूल अर्थ ही बदल जाता है। कबीर ने राजस्थानी अनुवाद करने के लिए दूसरी भाषाओं के वैकल्पिक शब्दों का उपयोग करने से परहेज की नसीहत दी। सेनुका हर्ष ने कहा कि शिक्षण संस्थाओं को साहित्यिक आयोजनों में आगे आना चाहिए। राम स्वरूप किसान, शंकर सिंह राजपुरोहित और पूर्ण शर्मा

''पूरण'' ने राजस्थानी गद्य साहित्य और अनुवाद विषय पर अपनी बात रखी। संजय पुरोहित और कृष्णा जाखड़ ने राजस्थानी पद्य साहित्य में अनुवाद के हालात से रूबरू करवाया। साहित्यकार डॉ. बृजरतन जोशी और मधु आचार्य ने आयोजन से राजस्थानी साहित्य, लेखक व आम पाठक को मिलने वाले लाभ का जिक्र किया। सविता जोशी और नगेन्द्र किराडू ने संचालन किया।